स्वयं सत्य खोजें

ADHYATMA YOG
अध्यात्म योग

अध्यात्म, योग साधना एवं स्वस्थ जीवनशैली का मासिक पत्र

वर्ष–9 अंक–6 जून 2010

संपादक
एन. के. जैन

सह संपादक
नगेन्द्र प्रसाद जैन

प्रकाशक–मुद्रक
स्वामी धर्मानंद

अक्षर विन्यास
सत्य प्रकाश दूबे

मुद्रणालय
सरोहा इंटरप्राइज़ेज़
29/E/1, महरौली
नई दिल्ली–110 030

प्रकाशन स्थान
अध्यात्म साधना केन्द्र,
छत्तरपुर, नई दिल्ली–७४

सदस्यता शुल्क

एक प्रति – 6 रु.
वार्षिक – 70 रु.
द्विवार्षिक – 120 रु.
संरक्षक – 1,500 रु.

कृपया अपना मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट 'अध्यात्म साधना केन्द्र' के नाम से भेजें।

इस अंक में पढ़ें

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
♦ महाप्रभु का महाप्रयाण	संपादकीय	2
♦ श्रद्धांजलि	साधना केंद्र	3
♦ मंगल संदेश	आचार्य महाश्रमण	४
♦ परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन का अंतिम दिन	साभार विज्ञप्ति	५
♦ श्रद्धांजलियां....	संकलन	
♦ हिंदी भाषा में		१४
♦ Condolence and Obituary		24

(Courtsy : Editors Here Now 4U)

स्थायी स्तंभ

♦ शंका एवं समाधान	४२
♦ अनुभव के स्वर	44
♦ अध्यात्म साधना केन्द्र द्वारा विभिन्न कार्यक्रम	45
♦ अध्यात्म साधना केन्द्र में होने वाले कार्यक्रमों का विवरण	48

विज्ञापन दरें

	एक अंक	वर्ष भर
आवरण पृष्ठ 2	रु. 2,000	रु. 20,000
आवरण पृष्ठ 3	रु. 3,000	रु. 30,000
आवरण पृष्ठ 4	रु. 5,000	रु. 50,000
विज्ञापन पट्टी रु. 300 {1½" x 4½"}	रु. 3,000	

Tel : (011) 2680 2708, 2680 2671; 6993 0824
e-mail: sadhanakendra@gmail.com; www.prekshaheart.com

सम्पादकीय

महाप्रभु का महाप्रयाण

हमारे आराध्य परम पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री महाप्रज्ञजी अचानक ९ मई को दोपहर २-५० मिनट पर बिना किसी शारीरिक व्याधि के इस नाशवान देह को छोड़ कर परलोक गमन कर गये। प्रातःकाल उठकर ध्यान कायोत्सर्ग एवं प्रतिक्रमण किया। दैनिकचर्या के अनुसार सारा कार्य हुआ। प्रशिक्षण एवं लेखन का कार्य भी किया। प्रातःकालीन प्रवचन में भी प्रवचन किया। आहार के समय कई संत एवं साध्वियों सबको प्रसन्न वदन कौर प्रदान कर आनन्दित किया। विश्राम करने के पश्चात सदा की भांति श्रद्धालुओं को दर्शन देने एवं प्रशिक्षण का तथा लेखन करके कक्ष में पधारे। श्रद्धालुओं को दर्शन देने के पश्चात सीने में कुछ जलन का अनुभव हुआ तो वापिस विश्राम कक्ष में पधारे। वहीं युवाचार्य श्री भी पधार गये। काफी संत एवं सतियांजी वहां पर मौजूद थे। क्रूर काल ने उन सब के सामने उनको लेकर चला गया।

महात्मा महाप्रज्ञ जैसे प्रज्ञा पुरूष युगावतारी होते हैं। एक ओर जहां विश्व में हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा है, वहां गुरूदेव के हृदय में करूणा का सागर हिलोरे ले रहा था। लगभग ७ वर्षों तक देश के विभिन्न राज्यों के गांवों शहरों एवं कस्बों में अहिंसा यात्रा के द्वारा अहिंसा का शंख नाद फूंका एवं अहिंसा प्रशिक्षण का नया कार्यक्रम देकर अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए जन-जन को प्रेरित किया। गुजरात की जनता ने उसे अपनाया एवं वहां के लोगों के हृदय से वैमनस्यता दूर हुई एवं सभी संप्रदायों के त्योहार शांतिपूर्वक मनाये गये। हिंसा समाप्त हो गई।

उनके द्वारा प्रदर्शित मार्गदर्शन वर्तमान की समस्याओं के लिए समाधान कारक है। उनका हर तरफ का ज्ञान जिसमें शरीर विज्ञान को स्वास्थ्य शास्त्र का अंग बनाया, सापेक्ष अर्थशास्त्र के द्वारा वर्तमान की आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। उन्होंने जैन दर्शन, अध्यात्म योग साधना, व्यक्तिगत एवं समाजिक सौहार्द स्थापित करने के लिए विपुल साहित्य का निर्माण किया। लगभग ३०० पुस्तकों के रचयिता गुरूदेव महाप्रज्ञजी हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति के अध्यात्मिक पथप्रदर्शक के रूप में विख्यात हुए एवं दोनों ने मिलकर एक पुस्तक 'परिवार एवं राष्ट्र' लिखी। हम अनाथ नहीं हुए हैं आचार्य महाश्रमणजी को हमें आचार्यरूप में प्रदान कर गये हैं।

हम उनकी आत्मा अपने लक्ष्य परमात्मा पद को प्राप्त करें यही मंगल भावना करते हैं। हम उनकी प्रदत्त शिक्षाओं को जीवन में उतार कर जनकल्याणकारी प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाएं।

श्रद्धांजली

६ मई २०१० को मध्याह्न में ३:३० बजे के लगभग यह समाचार मिला की **आचार्य श्री महाप्रज्ञ** का स्वर्गवास हो गया है, सुन कर स्तब्ध रह गये। सूचना देने वाले विश्वस्त व्यक्ति थे पर मन नहीं माना। इतने में दो तीन ओर से वही समाचार आये तो मानना ही पड़ा की गुरुदेव हमें छोड़कर चले गये हैं। ४० वर्षों के उनके संपर्क के चित्र एक-एक स्मृति पटल से बाहर आते गये। मुझे यह ध्यान में अनुभव हुआ कि वे मेरे हृदय में विराजमान हैं कहीं नहीं गये हैं।

गुरुदेव का अध्यात्म साधना केंद्र के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। सर्वप्रथम १९६६ में जबकि प्रेक्षा ध्यान का क्रम प्रारंभ नहीं हुआ था, आपका एक अध्यात्म-ध्यान शिविर का आयोजन हुआ था उसमें भारत के उस समय के मुर्धन्य चिन्तक, मोरारजी भाई देसाई, श्रीमन्न नारायण, जय प्रकाश नारायण, खण्डुभाई देसाई, जिनेंद्र कुमार जैन, गोपीनाथ अमन आदि ने भाग लिया था अणुव्रत के साथ ध्यान साधना का क्रम जुड़ा। प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग १९७५ में प्रारंभ होने के साथ अध्यात्म साधना केंद्र में भी प्रेक्षाध्यान प्रारंभ हुआ। १९८१, १९८७ के अणुव्रत भवन में चातुर्मास होने पर भी साधना केंद्र में शिविर लगे। १९९४, १९९६ एवं २००५ के चातुर्मास आपके अध्यात्म साधना केंद्र में हुए एवं अध्यात्म साधना केंद्र कि अध्यात्मिक गतिविधियों को विस्तार मिला।

गुरुदेव के श्री वचनों का सतत् स्मरण रखते हुए हम उनके मानव कल्याणकारी मिशन में सर्वात्मना समर्पित होकर कार्य करेंगे।

- स्वामी धर्मानंद एवं केंद्र के कर्मचारीगण

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण का
चतुर्विध धर्मसंघ के नाम

मंगल संदेश

अर्हम

आज दिनांक ६-५-२०१० (द्वितीय वैशाख कृष्णा एकादशी) को चिकित्सकीय प्रमाण पत्र के अनुसार अपराह्न लगभग २.५५ पर परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सरदारशहर में महाप्रयाण हो गया। तेरापंथ का दशम सूर्य अदृश्य हो गया। गुरुदेव का हम सब पर महान उपकार है। अब हम उनकी स्मृति कर सकते हैं, कृतज्ञता का भाव प्रकट कर सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने मानव जाति, जैन शासन और तेरापंथ धर्मसंघ की महान सेवा की। मैं, मेरे धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों और समण श्रेणी की चित्त समाधि के लिए प्रयत्न करता रहुंगा, यह मेरा संकल्प है। तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक समाज को भी मैं आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते रहने का संकल्प करता हूं। इसके अतिरिक्त जैन शासन और मानव जाति की यथासंभव और यथोचित सेवा करने का संकल्प करता हूं।

इस कठिन परिस्थिति में हम सब मनोबल रखने का प्रयास करें और धर्मशासन की प्रभावना का प्रयास करते रहें।

सरदारशहर (राजस्थान) आचार्य महाश्रमण

६ मई २०१०

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन का अंतिम दिन

पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में महाप्रज्ञ का मनोनयन कर तेरापंथ धर्मसंघ को आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में एक समर्थ और यशस्वी आचार्य प्रदान किया। पूज्य गुरुदेव ने आचार्य पद का विसर्जन कर अपना दायित्व आचार्य महाप्रज्ञ में संक्रांत कर दिया। उन्होंने अपने पवित्र कर कमलों से अपने उत्तराधिकारी का आचार्य पदाभिषेक किया। ५ फरवरी १९९५ को आचार्य श्री महाप्रज्ञ गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की पावन सन्निधि में अध्यात्म साधनाक केंद्र दिल्ली में विधिवत आचार्य पद पर आसीन हुए। जैन शासन के इतिहास की यह विरल घटना है।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने ५ फरवरी १९९५ से ९ मई २०१० तक तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य पद का दायित्व पूर्ण जागरूकता एवं कुशलता से निभाया। ९ मई २०१० को वे अकस्मात इस दुनिया से विदा हो गए। इस अकल्पित घटना से तेरापंथ समाज और जैन समाज ही नहीं, पूरा धार्मिक जगत स्तब्ध रह गया।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अपने जीवन के एक-एक क्षण को पूर्ण जागरूकता और अप्रमत्तता के साथ जीया। उनके जीवन के अंतिम दिन की चर्या इसका जीवंत प्रमाण है।

९ मई २०१० को आचार्य प्रवर प्रातःकाल चार बजे जागृत हुए। चार से पांच बजे तक ध्यान, कायोत्सर्ग आदि की साधना की। अर्हत वंदना, प्रतिक्रमण एवं प्रतिलेखन से निवृत्त हुए। सूर्योदय के पश्चात साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां वंदना करने आई। आचार्यवर ने प्रसन्न मुद्रा में वंदना स्वीकार की। कुछ वार्तालाप भी किया।

आचार्यवर लगभग छह बजे श्रीसमवसरण से गोठी भवन में पधारे। उल्लेखनीय है– आचार्यवर का दिन में रणजीत गोठी के आवास पर तथा रात्रि में श्रीसमवसरण में विराजना होता था। पूज्यवर शौच आदि से निवृत्त होकर पट्ट पर विराजे। उसके बाद प्रतिदिन की भांति आचार्यवर ने आसन, प्राणायाम आदि के प्रयोग किए।

सवा सात बजे साध्वी सुप्रभाजी, साध्वी शुभ्रयशाजी आदि साध्वियां गोचरी लेकर आईं। आचार्यवर प्रसन्नमना प्रातराश (नाश्ता किया।)

प्रातराश के पश्चात वैद्य मन्नालालजी सेठिया आए। आचार्यवर ने उनसे स्वास्थ्य, आयुर्वेद आदि कई विषयों पर वार्तालाप किया। **आचार्यवर ने कहा – 'आज मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। कफ भी कम है, पित्त भी शांत है और आयु की समस्या भी नहीं है। मुझे बहुत हल्कापन महसूस हो रहा है।**

श्री सेठियाजी ने यह सुनकर संतोष और आनंद का अनुभव किया।

आचार्यवर प्रातराश के पश्चात इन दिनों प्रेक्षाध्यानः प्रयोग पद्धति पर एक मौलिक पुस्तक का आलेखन करवा रहे थे। आप बोलते जाते और मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी उसकी प्रतिलिपि करती। आचार्यवर ने आज लगभग आधा घंटा आलेखन करवाया। आज के आलेखन कार्य को विराम देते हुए आपने कहा– 'इस पुस्तक का आज प्रायः पूरा काम करवा दिया है।'

प्रातः आठ बजकर पचास मिनट पर युवाचार्यश्री महाश्रमण आचार्यवर की सन्निधि में आए। कुछ समय वर्तालाप किया। आचार्यवर की आज्ञा प्राप्त कर युवाचार्यश्री प्रवचन के लिए पधारे।

नौ बजकर चालीस मिनट पर आचार्यवर ने प्रवचन देने के लिए गोठी भवन से श्रीसमवसरण की ओर प्रस्थान किया।

श्रीसमवसरण के प्रवेश द्वार पर युवाचार्य श्री महाश्रमण ने पूज्यवर की अगवानी की। युवाचार्यवर का हस्तावलंब लेकर आचार्यवर ने श्रीसमवसरण में प्रवेश किया।

आज आचार्यवर ने 'संबोधि' पर लगभग पचीस मिनट तक प्रवचन किया। आचार्यवर का यह प्रवचन उनके जीवन का अंतिम प्रवचन बन गया।

प्रवचन के पश्चात आचार्यवर ने श्रद्धालु जनता को दर्शन दिए। फिर युवाचार्यवर का हस्तावलम्ब लेकर पुनः गोठी भवन में पधार गए।

गोठी भवन के भीतरी कक्षा में आचार्यवर और युवाचार्य श्री ने लगभग ग्यारह बजे अणुव्रत महासमिति, अणुविभा, अणुव्रत न्यास के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को उपासना कराई। अणुव्रत आन्दोलन के गौरवपूर्ण अतीत की विशद अवगति की। गुरुदेवश्री तुलसी की जन्म शताब्दी पर अणुव्रत आंदोलन के कार्यों को व्यापक बनाने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

साढ़े ग्यारह बजे साध्वी विमलप्रज्ञाजी गोचरी लेकर उपस्थित हुईं। आचार्यवर सदा की भांति प्रसन्नमना आहार के लिए विराजे। सदा की भांति आहार किया। आहार के बाद युवाचार्यश्री महाश्रमणजी आचार्यवर की सन्निधि में पधारे।

आचार्यवर विश्राम करने लगे और युवाचार्यश्री अपने कक्ष में पधार गए। अनेक बालमुनि सेवा में थे। मुनि सुधांशुकुमारजी ने समाचारपत्र के कुछ समाचार पढ़कर सुनाए। विश्राम के समय आचार्यवर बाल मुनियों से दैनिक पत्रों में प्रकाशित समाचार सुनते हैं, जिससे उनका हिन्दी उच्चारण शुद्ध हो सके। वे अच्छी तरह उसे पढ़ सकें।

लगभग साढ़े बारह बजे मुनि अक्षयप्रकाशजी ने आचार्यवर से रिलेटिव इकोनोमिक्स पर बात की। आगामी २५ सितंबर को प्रस्तावित अर्थशास्त्र विषयक कान्फ्रेंस के संदर्भ में दिशा-निर्देश

दिया। कुछ क्षण के बाद आचार्यवर निद्राधीन हो गए।

कुछ समय बाद आचार्यवर पट्ट पर आसीन हुए। मुनि रजनीशकुमारजी उदक लेकर आए। आचार्यवर ने जल पीया, फिर आवश्यक कार्य के लिए भीतरी कक्ष में पधारे।

कुछ देर बाद आचार्यवर पुनः बाहर पधार गए। आचार्यश्री ने कहा– 'आज रविवार है। आगम कार्य नहीं करना है, इसलिए कुर्सी को पट्ट के पास ही लगा दो।

निर्दिष्ट स्थान पर कुर्सी रख रहे संतों को आचार्यवर ने कहा– 'देखो, कुर्सी लोहे की बीम के नीचे तो नहीं है?'

संतों ने कहा – 'गुरुदेव ! कुर्सी उधर नहीं है।'

आचार्यवर कुर्सी पर विराज गए। कुछ क्षण बाद वहां शायद गर्मी का अनुभव हुआ, इसलिए उठकर खड़े हो गए और दरवाजे के परिपार्श्व में विराजे।

मुनि जयंतकुमारजी कुछ निवेदन करने के लिए आए। आचार्यवर से उन्होंने अपनी बात निवेदित की। उसी समय पंजाब के कुछ यात्रियों को उपासना कराई, मंगलपाठ सुनाया। गंगाशहर के श्री दीपचंद सांखला, तोलाराम श्यामसुखा, माणकचंदजी श्यामसुखा, आसकरणजी पारख आदि ने दर्शन किए। आचार्यवर ने उन्हें भी जिकारा देते हुए पूछा – 'कैसे आए हो?'

मध्याह्न में लगभग २.०७ पर आचार्यवर को असह्य जल महसूस हुई। आचार्यवर के निर्देश पर मुनि हितेन्द्रकुमारजी मुनि जयकुमारजी को बुलाकर लाए।

आचार्यवर ने कहा – ''बहुत जलन हो रही है, क्या दवाई दोगे?'

मुनि जयकुमारजी ने निवेदन किया– 'आचार्यवर की मर्जी हो तो मिश्री और चंदन का तेल ले लो।' आचार्यवर ने इसके लिए अनुमति दे दी। मुनि जयकुमारजी उसी समय चंदन का तेल

मिश्री के साथ ले आए। आचार्यवर ने उसका उपयोग किया।

मुनि जयकुमारजी ने कहा – 'आचार्यवर ! जलन का कारण कुछ समझ में नहीं आ रहा है।' आचार्यवर ने कहा– 'आहार विदग्ध हो जाता है, इस कारण जलन हो जाती है।'

जय मुनि ने निवेदन किया– 'आहार में कुछ ऐसा नहीं लिया है, जिससे जलन हो।'

गुरुदेव ने कहा – 'आहार तो वही लिया जो रोज लेते हैं। उसमें तो कोई पदार्थ ऐसा नहीं था, जो जलन का कारण बने।'

मुनि जयकुमारजी ने निवेदन किया – 'आचार्यवर ! आप कुछ देर विश्राम कराएं।'

आचार्यवर ने स्वीकृति देते हुए कहा– 'ठीक है, भीतर कक्ष में चलो, वहीं विश्राम करेंगे।'

मुनि जयकुमारजी और मुनि हितेन्द्रकुमारजी का हस्तावलंब लेकर आचार्यवर भीतरी कक्षा में पधारे और उत्तराभिमुख होकर छोटे पट्ट पर विराजे। मुनि जयकुमारजी ने मुनि रजनीशकुमारजी को बुलाया। दोनों मुनि बड़े पट्ट को भीतर ले गए। बिछौना बिछाया और विश्राम के लिए निवेदन किया। आचार्यवर ने कहा– 'जलन ज्यादा हो रही है। और क्या करें, तुम पहले घोल ले आओ।'

आचार्यवर को अनेक बार एसिडिटी की समस्या होती रही है। तब प्रायः एलोपैथी दवा ट्राइकन एम. सी. एस. का घोल ले लेते और वह ऊष्मा शांत हो जाती। मुनि जयकुमारजी ने कहा – 'पहले विश्राम कराएं। मैं घोल ले आऊंगा।' गुरुदेव ने कहा– 'पहले घोल ले आओ।'

मुनि जयकुमारजी ने निवेदन किया – 'आप बड़े पट्ट पर विराज जाएं।'

'हां, यह कहते हुए आचार्यवर खड़े हुए। मुनि रजनीशजी

और मुनि हेमन्त सहारा दिए हुए थे। मुनि रोहितकुमारजी और मुनि हितेन्द्रजी सेवा में वहीं खड़े थे। आचार्यवर ने कहा – 'शरीर में शून्यता –सी आ रही है।'

मुनि रजनीशकुमारजी ने पूछा – 'डॉक्टर को याद कर लें?'

आचार्यवर ने कहा – 'हां, बुलाना ही है।'

पूज्यप्रवर को पट्ट तक जाने में अशक्यता अनुभव हुई तो रजनीश मुनि ने निवेदन किया – 'आचार्यवर यहीं विराज जाएं।'

आचार्यवर के लिए खड़े रहना भी मुश्किल हो गया। वे उसी समय पट्ट पर विराज गए।

रजनीश मुनि ने कहा – 'मैं युवाचार्यश्री को निवेदित कर दूं कि आचार्यवर के ठीक नहीं है?'

आचार्यवर ने कहा – 'हां, कर दो।'

मुनि रजनीशकुमारजी तत्काल युवाचार्यश्री को स्थिति निवेदित करने गए। युवाचार्यश्री उस समय कक्ष के ठीक बाहर भिक्षु वांङ्मय का पारायण करा रहे थे। अनेक मुनि तथा मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी आदि साध्वियां उसमें सहभागी थे।

मुनि रजनीशकुमारजी ने युवाचार्यश्री से निवेदन किया– 'आचार्यवर के ठीक नहीं है। जलन ज्यादा है। शून्यता भी आ रही है।'

उधर मुनि रजनीशकुमारजी निवेदन कर रहे थे, इधर मुनि रोहितकुमारजी आचार्यवर के शरीर को सहारा दिए हुए थे। अचानक गर्दन कुछ नीचे हुई। पूरा मुंह फूल गया। मुनिजी ने तत्काल मुखवस्त्रिका खोल दी। मुनि रजनीशजी युवाचार्यवर को निवेदन कर उसी क्षण वापस आ गए। आचार्यवर के निकट पहुंचते ही देखा– आचार्यवर तन्द्रा की –सी स्थिति में जा रहे हैं।

युवाचार्यश्री उसी समय भीतर पधारे। अनेक साधु-साध्वियां

भी आ गए। यह समय लगभग २.१२ का रहा होगा। आचर्यवर की गर्दन सीधी हुई। सिर एकदम उन्नत हुआ। वे नीचे जमीन की ओर झुकने लगे।

यह संभावना की जा सकती है कि जिस समय आचार्यवर का मस्तक ऊंचा हुआ, उसी समय मस्तिष्क से उनके प्राण निकल गए। महाप्राण निष्प्राण हो गए। अध्यात्म का ज्योति –दीप सहसा बुझ गया।

श्रद्धेय युवाचार्य श्री महाश्रमण, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, सेवा में संलग्न संत तथा साधु-साध्वियों से भरे विशाल कक्ष में आचार्यवर ने अपने जीवन की अंतिम सांस ली। ऐसा लग रहा था जैसे महायोगी अपने धर्म परिवार के सम्मुख अपने उत्तराधिकारी को अपनी विरासत सौंप चिदाकाश में चिन्मय बन विलीन हो गया।

मुनि किशनलालजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि धनंजयकुमारजी और डॉ. मोहनलाल जी दूगड़ (चेन्नई) आदि ने मुंह में हवा का प्रेक्ष कर और अन्य मुनिजनों ने मालिश कर पुनः पूज्यवर को सचेतन करने का प्रयास किया, किंतु प्रयत्न सफल नहीं हुआ। चेतना के विलीन होने पर सप्राण बनाने का प्रयत्न सफल होता भी तो कैसे ? शरीर नीचे की ओर झुकता जा रहा था।

आचार्यवर के जीवन में इस प्रकार की शून्यता और बेहोशी के अनेक क्षण आए। सभी अवसरों पर संतो द्वारा की गई मालिश एवं प्राथमिक उपचार से कुछ ही क्षणों में सचेतन हो गए। किंतु यह शून्यता की स्थिति नहीं थी। वह महापुरूष पूर्ण जागरूकता की स्थिति में शरीर के बंधन से मुक्त होकर चेतना के आकाश में विलीन हो गया था।

मुनि धनंजयकुमारजी ने युवाचार्यवर से अनुरोध किया– 'अब आचार्यवर को पट्ट पर सुला दिया जाए। युवाचार्यश्री की स्वीकृति से पांच –छह संतों ने आचार्यवर को उठाया और पट्ट

पर लिटा दिया। आचार्यवर सहज कायोत्सर्ग की मुद्रा में लेट गए। कुछ क्षण बाद ही डॉ. जतन बैद, डॉ. अमोलक गोलछा एवं वैद्य मुन्नालालजी सेठिया पहुंचे। उन्होंने निरीक्षण किया। नाड़ी की गति देखी, ई.सी.जी. किया। ऑक्सीजन देने का प्रयत्न किया... किंतु वे सब उपचार निरुपचार सिद्ध हुए।...

और २ बजकर ५५ मिनट पर डॉ. अमोलक गोलछा एवं डॉ. जतन बैद ने मृत्यु का प्रमाणपत्र युवाचार्यवरके हाथों में थमा दिया।

श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने अवरूद्ध कंठ एवं भाव विह्वल स्वर में यह सूचना दी– 'धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता, हमारे महान उपकारी आचार्य अब इस संसार में नहीं रहे।'

ज्यों ही यह सूचना प्रसारित हुई, लोगों का हुजूम गोठी भवन में दर्शनार्थ पहुंचने लगा। चारों ओर जनता का एक रेला सा चल रहा था। गोठी भवन, श्रीसमवसरण तथा परिपार्श्व की गलियां जनसंकुल बन गईं।

तेरापंथ धर्मसंघ की विधि के अनुसार तीन बजकर इकतीस मिनट पर श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमण ने परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ की पार्थिव देह यह कहते हुए श्रावक समाज को संभला दी। – 'जिस महापुरुष ने लगभग अस्सी वर्ष तक संयम की साधना की, धर्मसंघ की सेवा की, जैन शासन और मानव जाति के हितों के लिए समर्पित रहे, हम सब पर महान उपकार किया, मेरी स्वयं की बहुत सेवा की, मुझे आगे बढ़ाया, उन तेरापंथ के दशमाधिशास्ता परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पार्थिव शरीर को हम श्रावक समाज को भुला रहे हैं। ..बोसिरे... बोसिरे' –युवाचार्यश्री ने इस वाक्य के उच्चारण के साथ पूज्यवर का पार्थिव शरीर श्रावक समाज की धरोहर हो गया।

इस संघीय विधि की संपन्नता के साथ वयोवृद्ध मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ने धर्मसंघ की परंपरा के अनुसार चतुर्विध धर्मसंघ के समक्ष घोषणा की – 'अब हमारे धर्मसंघ के ग्यारहवें

आचार्य आचार्य महाश्रमण हैं।'

पूज्य गुरुदेव की पार्थिव देह को लगभग साढे चार बजे गोठी भवन से श्रीसमवसरण लाया गया। वही श्रीसमवसरण जहां आचार्यवर ने आज अपने जीवन का अंतिम प्रवचन किया था। पार्थिव शरीर को उसी प्रवचन स्थल पर प्रस्थापित कर दिया गया। चारों ओर बर्फ की शिलाएं रख दी गईं।

अपार जनसमूह पार्थिव देह की अंतिम झलक पाने के लिए उमड़ पड़ा। सभी जाति और वर्ग के लोगों का तांता-सा लग गया। कुछ ही घंटों में आसपास के क्षेत्रों के हजारों लोग पहुंच गए। रात भर लोग ससंघ आते रहे। हजारों लोग चार्टर्ड प्लेनों से आए। पूरा सरदारशहर जैसे जनाकीर्ण बन गया। हर व्यक्ति इस महापुरुष के पार्थिव देह की एक झलक पाने के लिए व्याकुल था। ६ मई से शुरू हुआ जनता का यह प्रवाह १० मई को तीन बजे अपने चरम पर पहुंच गया। लगभग २ लाख व्यक्तियों के एकत्रित होने का अनुमान है।

महाप्रयाण यात्रा

मध्याह्न में लगभग सवा तीन बजे श्रीसमवसरण से अंतिम महाप्रयाण यात्रा प्रारंभ हुई। नगर के प्रमुख मार्गों, बाजारों, घंटाघर, तेरापंथ भवन, शेखावत कॉलोनी, गांधी विद्या मंदिर, मूलचंदजी मालू द्वारा प्रदत्त भूमि से होते हुए अंतिम यात्रा बच्छावत फार्म हाउस में पहुंची। यह अंतिम यात्रा लगभग छह किमी. लंबी थी। चारों ओर जनता ही जनता दिखाई दे रही थी। प्रशासनिक सूत्रों एवं प्रबंधकों की सूचना के अनुसार अंतिम यात्रा में लगभग डेढ़ से दो लाख लोग संभागी बने।

बच्छावत फार्म हाउस में पूज्यवर के संसारपक्षीय परिजनों ने मुखाग्नि दी। महाज्योति ! महाज्योति में विलीन हो गई। अंतिम यात्रा बहुत प्रभावक, गरिमामय और ऐतिहासिक रही। धर्मसंघ की अतिशय प्रभावना हुई।

-साभार विज्ञप्ति

श्रद्धांजलियां

मुझे, जैन श्वेतांबर तेरापंथ समुदाय के १०वें आचार्य और सर्वोच्च प्रमुख आचार्य महाप्रज्ञजी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दुख हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान संत और दार्शनिक थे। उन्होंने अणुव्रंत आंदोलन को नई दिशा दी तथा 'अपनी अहिंसा यात्रा' के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र में शांति व समरसता का संदेश फैलाया। उनके निधन से हमने एक ऐसी महान विभूति को खो दिया है। जिनमें एक आध्यात्मिक शक्ति थी और जिन्होंने सदैव समाज के कल्याण के लिए कार्य किया।

मैं जैन श्वेतांबर तेरापंथ समुदाय के समस्त सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदन व्यक्त करती हूं।

प्रतिभा पाटिल, राष्ट्रपति

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के समाचार से मुझे बहुत गहरा दुख हुआ। उनका अभाव न केवल जैन समाज और तेरापंथ के लिए एक अपूरणीय क्षति है, बल्कि पूरे भारतीय समाज के लिए ऐसी कमी है, जिसका पूरा होना लगभग असंभव है।

वे एक अत्यंत उच्चकोटि के विद्वान, साहित्य सर्जक और समाज के मार्गदर्शक थे। उन्होंने जीवन भर जिन मानव मूल्यों की स्थापना और उनके प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया, उनके बिना मानव समाज और मानव सभ्यता की कल्पना नहीं की जा सकती।

वे अहिंसा की प्रतिमूर्ति थे। धर्म को वे समाज की सेवा और श्रेष्ठ संस्कार देने का माध्यम मानते थे। अणुव्रत आंदोलन में

उनका योगदान और उनकी अहिंसा यात्रा एक लंबे समय तक याद की जाएगी।

उनसे व्यक्तिगत भेंट एवं वार्ता के क्षण मेरे स्मृति-पटल पर सदैव अंकित रहेंगे। इस गहन शोक के अवसर पर ऐसे तपस्वी और विद्वान के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। मुझे विश्वास है कि आने वाली पीढ़ियां उनके चिंतन एवं कर्म से निरंतर प्रेरणा ग्रहण करेंगी।

सोनिया गांधी, अध्यक्ष-अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

परमश्रद्धास्पद पूज्यपाद आचार्य महाप्रज्ञजी का देहावसान समस्त मानवसमाज के लिए एक असहनीय आघात है। समस्त विश्व के मंगल की कामना को लेकर वैश्विक जीवन के मूल सत्य की अनुभूति अपने कृति में जीकर दिखानेवाले वे हम सबके लिए जीवनपथ पर दीपस्तंभसमान थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उनकी अकृत्रिम व अयाचित कृपादृष्टि सदैव रहती थी। उनसे प्रत्यक्ष मिलने का सौभाग्य मुझे एक से अधिक बार प्राप्त हुआ था। उनका निरपेक्ष स्नेह, समस्याओं का अचूक निदान व सरल किंतु परिणामकारक समाधान देने की शैली व सभी को सही पथ पर चलाने की क्षमता का उनके सर्वस्पर्शी, गहन व व्यापक ज्ञानसंपदा के साथ मैंने अनुभव किया है। ऐसे महापुरुषों का भौतिक वियोग सभी के लिए दुखद व दुःसह है। फिर भी उनके जीवनकृति की स्मृति विश्वमानवता के लिए नित्यजीवन की शाश्वत दिग्दर्शिका है। अब हम सबको उसी का आधार है। उनकी उस पवित्र स्मृति में मेरी व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि।

मोहन भागवत, सरसंघचालक-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

तेरापंथ के दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के देहावसान पर मुझे अत्यंत दुख हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ महान चिंतक, विचारक और ख्यातिप्राप्त संत थे। उन्होंने सदैव शांति, संयम, नैतिकता और

इंसानियत का प्रचार-प्रसारन किया। उनके न रहने से धर्म और मानवता की बड़ी क्षति हुई है। उनका जीवन और कार्य तथा उनके उत्तम विचार हम सबको प्रेरणा देते रहेंगे। कृपया मेरी हार्दिक संवेदना स्वीकार करें।

शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री-दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता एवं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण का समाचार पाकर बहुत दुख हुआ।

मानव धर्म और अहिंसा का प्रचार-प्रसार करने के कार्य में आचार्य महाप्रज्ञजी ने बहुमूल्य योगदान दिया है। शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए उनके द्वारा निकाली गई यात्रा बहुत लोकप्रिय साबित हुई थी। उनके आकस्मिक निधन से मानवता और अहिंसा के लिए कार्य करने वाले शांतिदूत को हमने खोया है। उनका कार्य हमेशा के लिए याद किया जाएगा। अहिंसा और मानवता का उनका कार्य आगे जारी रखना उन्हें सही श्रद्धांजलि होगी। मृतात्मा कापे शांति मिले, यही प्रार्थना।

अशोक चह्वाण, मुख्यमंत्री-महाराष्ट्र

आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने नए आयाम स्थापित किए

श्री दिंगंबर जैन मंदिर, ऋषभ विहार में विराजमान सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज ने अपने प्रवचन में कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग के माध्यम से जैन साधु संमाज के लिए नए आयाम स्थापित किए। जब वे समयसार पर प्रवचन करते थे तो ऐसा लगता था जैसे साक्षात् आचार्य कुंदकुंद बोल रहे हों। लोग आत्म विभोर उनके प्रवचन सुनते थे। उनके जाने से समस्त साधु एवं श्रावक समाज की अपूरणीय क्षति हुई हैं। इनके कार्य स्वर्ण-अक्षरों में अंकित किए जाएंगे।

-आचार्य विद्यानंद, श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट

समाचार पत्रों में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा श्रद्धांजलियां

आचार्य महाप्रज्ञजी महान तपस्वी एक सच्चे समाजसुधारक थे आचार्य श्री के देवलोक होने से तेरापंथ समाज के साथ-साथ भारत ने एक सच्चा संत खो दिया है। राज्यपालश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी के हाल ही में मैंने दर्शन भी किये थे।

अहमदाबाद गुजरात राज्य के राज्यपाल डॉ. कमला

शांति अहिंसा को नई दिशा दी आचार्य महाप्रज्ञजी ने। तेरापंथ समाज के साथ-साथ जैन समाज को इस दुख की घड़ी में हम सब उनके साथ हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी जैन धर्म के विषय पर अत्यधिक चिंतन मंथन करके शांति और अहिंसा के लिए कार्य किया है।

गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी

आचार्य महाप्रज्ञ ने संपूर्ण मानव समाज को शांति एवं सद्भाव का जो संदेश दिया। वह मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। उन्होंने कहा कि उनके निधन से संपूर्ण समाज और देश को अपूर्णीय क्षति हुई है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने देश में शांति एवं सद्भाव कायम रखने के लिए पूरे देश में पैदल यात्राएं कर अनूठी मिसाल कायम की तथा अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से अपना योगदान दिया।

केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री
डॉ. सी. पी. जोशी

आचार्य महाप्रज्ञ भगवान के अवतार थे। वर्तमान युग में महात्मा गांधी और आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ समय में प्रासंगिक रहेंगे तथा उनके बताये मार्ग से ही आम जन का कल्याण होगा। आचार्य महाप्रज्ञ सच्चे प्रणेता थे।

चंद्रमणि अस्पताल के संचालक डॉ. रूपकुमार अग्रवाल

महाप्रज्ञ ने अणुव्रत और अहिंसा के माध्यम से इंसानियत को बढ़ावा दिया। देश ने एक महान संत खो दिया।

डॉ. अब्दुल कलाम

महात्मा महाप्रज्ञ परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के सर्वोत्तम उत्तराधिकारी थे। मेरी दृष्टि से महात्मा महाप्रज्ञ 'विश्व धर्म इतिहास' में वर्णित समस्त महात्माओं के खास-खास गुणों को स्वयं में संजोये हुए थे। ये प्रज्ञा और ध्यान योग से संपन्न थे। महान दार्शनिक थे, कवि, साहित्यकार और मनिषि थे। गंभीर से गंभीर विषय को सहज ढंग से समझाने की अपूर्व क्षमता रखते थे।

महात्मा महाप्रज्ञ भारतीय संस्कृति, जैन संस्कृति और जैन आगम के ज्ञाता हैं। आगम सूत्रों की व्याख्या भी वैज्ञानिक और आधुनिक संदर्भ में करते हैं। यही कारण है कि ज्ञान पिपासु व्यक्ति, भले ही वह झोंपड़े में रहने वाला हो, अथवा ऊंची अट्टालिका का वासी हो, इनकी अमृतवाणी से लाभान्वित हो सकता है/हो रहा है।

इनके प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत और अहिंसा दर्शन के नित नये प्रयोगों से मानव के जीवन में आशा और विश्वास का संचार हुआ है। तेरापंथ धर्मसंघ को जन-जन तक पहुंचाने का आपने अथक प्रयास किया है। बहुचर्चित 'अहिंसा यात्रा' से समाज में समन्वय, भाई चारा और मैत्री भावना का विस्तार हुआ है।

महात्मा महाप्रज्ञ सरल, सहज, सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। वे दृढ़ संकल्पी, क्षमाशील, स्नेह, प्रेम, करुणा के सागर थे। इनका जीवन ज्ञान-दर्शन-चारित्र का अपूर्व संगम था। जितना उन्होंने लिखा है, विद्वान से विद्वान पढ़ाकू व्यक्ति अपनी पूरी जिंदगी में नहीं पढ़ सकता, और जितना उन्होंने ज्ञान बिखेरा है, वह आने वाली सौ पीढ़ियों के जीवन निर्माण के लिए पर्याप्त है। वे नित

नये विचारों का सृजन करते थे और मुक्त हृदय से विसर्जन कर देते थे।

परम पूज्य गुरुदेवश्री जी का जीवन तप एवं संयम का जीवन था। वे अहिंसावादी सिद्धांतों के सिर्फ दृष्टा ही नहीं, प्रयोगकर्ता भी थे। इनका माननाथा कि दुनिया से भागें नहीं, उसे और अधिक सुंदर बनाने का सतत प्रयास करते रहें। सचमुच महात्मा महाप्रज्ञ इस युग के आलोक स्तंभ थे। अपने आराध्य गुरुदेव महात्मा तुलसी के साथ अपने कोलकाता से कन्याकुमारी तक की धरा पर पदचिन्ह् अंकित किये थे। आपके सुयोग्य नेतृत्व में आपके उत्तराधिकारी युवाचार्य महाश्रमणजी भी विद्वानों, नेताओं, श्रमिकों, किसानों, विद्यार्थियों के सच्चे मार्गदर्शक के रूप में उभरे हैं।

जैन श्रावक के लिए अपने परम वन्दनीय गुरूदेव की अभ्यर्थना करना, उनकी सेवा करना, उन्हें प्रसन्न रखना पुनीत कर्तव्य माना जाता है। शास्त्रों में उल्लेख है कि जिस श्रावक पर गुरु का आशीर्वाद रहता है, वह सदा-सदा आनन्दित रहता है। मेरा मानना है कि आगामी सौ वर्षों के बाद आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी पूज्य गुरुदेव श्री के महान अनुदानों और उपकारों को न केवल समझेगी ही, अपितु उनके आदर्शों को अपने जीवन में धारण कर उन्नति पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

जिनेन्द्र कुमार जैन संपादक 'जिनेन्दु'

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर,

श्री चरणों में सादर नमन,

आज आपके ४९वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर ईश्वर से यही मंगल कामना करता हूं कि आप पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के द्वारा प्रदान किए गए ११वें आचार्य के इस महत्वपूर्ण पद को अपने सुविचारों एवं क्रियाकलापों से गौरवान्वित करें। सौभाग्य से आपको परम पूज्यनीय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का सर्वाधिक

सान्निध्य, संरक्षण एवं पुनीत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। सही रूप में आप उनके बताये हुए मानव धर्म एवं सर्वधर्म समभाव को और अधिक सार्थक विस्तार दे पायेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की कमी को पूरा करना संभव नहीं है, परंतु उनके द्वारा बताये हुए रास्ते पर चलना हम सभी का दायित्व है। अंतिम श्वास तक उन्होंने मानव जाति की सेवा ही नहीं की वरन् कई नए आयाम प्रतिस्थापित कर विभिन्न पंथों व धर्मावलंबियों एवं संकटग्रस्त व्यक्तियों के लिए वे सत्य का सहज मार्ग प्रशस्त कर गए हैं।

मुझे उनके इन्हीं नए आयामों में से एक नये आयाम ''सापेक्ष अर्थशास्त्र'' के साथ नजदीक से कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा इस कार्य को पूरा करने का दायित्व उन्होंने दिल्ली में २००५ में मुझे सौंपा था तथा **International Centre for Economics of Non-violence & Sustainability (ICENS)** पिछले पांच वर्षों से निरंतर यह प्रयास चलता रहा कि कैसे अर्थशास्त्र के नये स्वरूप को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। आचार्य महाप्रज्ञ जी तथा आपके सान्निध्य में चार अंतराष्ट्रीय स्तर पर विचार-विमर्श इस विषय पर दिल्ली (२००५), उदयपुर (२००७), जयपुर (२००८) तथा लाडनूं (२००९) में आयोजित हुए थे।

परम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण से भारत को ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की एक अपूरणीय क्षति हुई है। वे सिद्धांत व व्यवहार दोनों में पूर्णतया प्रवीण थे। वे ऐसे सरल व सच्चे संते थे कि उनको संतों के संत (संत शिरोमणि) कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मैं सदैव उनके लिए कहा करता था। **'He is living legend o our times'.** वे आज भी हमारे मध्य विद्यमान हैं और सदैव रहेंगे। वे महाप्रज्ञ ही नहीं, अपितु **'स्थित प्रज्ञ'** थे।

मैंने अपने जीवन में आज तक एक ही ऐसा संत देखा, सुना

और पढ़ा है जो 'अभाव–आधिक्य' की समस्याओं के प्रति चिन्तित रहा हो, और साथ ही उसके कारणों की सतत खोज करता रहा हो। इनका आध्यात्मिक विश्लेषण करते करते वे 'सापेक्ष अर्थशास्त्र' की नई अवधारणा को केंद्र में लाने के पक्षधर हो गये थे। उन्होंने अपने लेखों व प्रवचनों में 'असमानता' को कम करने पर जो बल दिया और इसके समाधान के लिए जो सुझाव दिये, वे सभी विद्वानों और विचारकों के लिए गहन मनन के योग्य हैं। धर्म व अर्थ के समन्वयन के संबंध में उनका शोध अपूर्व है। मुझे आशा है कि मुनिश्री अक्षय प्रकाश जी इस विषय पर अपने शोध के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों एवं स्वप्न को साकार कर पायेंगे।

महाप्रयाण से ठीक कुछ समय पूर्व ही आचार्य श्री ने अपनी पुस्तक ''अनेकान्त' मेरे पास समीक्षा हेतु भिजवायी थी, जिसे मुझे किसी अच्छे अंतर्राष्ट्रीय विद्वान के पास भिजवानी थी। मैंने इस संबंध में एक पत्र पिछले माह ही दिनांक १७ मार्च २०१० को आचार्यश्री की सेवा में कुछ सुझावों के साथ भेजा था। यही मेरा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साथ अंतिम संवाद था। आचार्यश्री अनेकांतवाद के अंतर्गत चार पुस्तकों के लेखन की योजना क्रमशः 1. Philosophy of co-existence, 2. Co-existence & Economics. 3. Co-existence & Political System, and 4. Co-existence & Social Order बना चुके थे। उनकी यह योजना उनके जीवनकाल में प्रांरभ तो हो चुकी थी परंतु उने महाप्रयाण से यह पूरी नहीं हो पाई।

यह कभी भी अनुभव नहीं हुआ कि अचानक आचार्यश्री हमारे बीच से चले जायेंगे। आचार्य श्री के इस सपने को पूरा करने का दायित्व हम सबका है। मैं आशा करता हूं कि आपके मार्गदर्शन में आचार्य श्री के इन कार्यों को हम पूरा कर पायेंगे। आचार्यश्री के महाप्रयाण के पश्चात् आप द्वारा प्रसारित प्रथम संदेश जो कल सुबह जयपुर की श्रद्धांजलि सभा में मुनिवर द्वारा पढ़ कर सुनाया गया, आपकी समर्पित निष्ठा से आचार्यश्री के

सपनों को पूरा करने का प्रत्यक्ष प्रयास है।

अभी कुछ दिनों पूर्व ही बजरंग जी जैन दिनांक २६ अप्रैल २०१० से २६ अप्रैल २०१० तक अपने शोध कार्य हेतु मेरे साथ ही थे। वे आचार्यश्री के साथ लंबा समय बिता कर सरदार शहर आगमन तक उनके साथ ही थे। उन्हीं से आचार्यश्री के कुशल मंगल के समाचार प्राप्त हुये थे। इस बीच मुझे सिमन फ्रेजर विश्वविद्यालय, कनाडा से एक निमंत्रण प्राप्त हुआ है, जिसका विषय ''कार्डियोवसक्यूलर डिजिज्'' है। मुझे सामाजिक –सांस्कृतिक प्रसंगों के ऊपर अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस कार्य को संपादित करने से पूर्व आचार्य श्री को इस विषय की सूचना तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु पत्र लिखने की मेरी जो योजना थी, वह भी अधूरी रह गयी।

यह भी आश्चर्य की बात है कि सन् २०२० में सबसे अधिक मृत्यु हृदय रोग से भारत में होगी। संभवतया मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया में कोई दोष उत्पन्न हो गया है। आचार्यश्री का मूल मंत्र था, अच्छे मनुष्य का निर्माण किस प्रकार हो और यही मेरी प्रस्तुतीकरण का विषय होगा। आचार्यश्री के दर्शन व आदर्शों को सही प्रकार से मानव जाति के समक्ष रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित उनका दैनिक स्तम्भ ''तत्वबोध'' संपूर्ण मानव समाज के कल्याण का मार्गदर्शक बना है। इसमें अब तक प्रकाशित विचारों का देश–विदेश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अनुवाद प्रकाशित होता रहे और जन समुदाय उसको पढ़ कर अपने जीवन व आचरण में उपयोग करना आरंभ कर दे तो निःसंदेह एक सुखद, सुंदर व आनंदमयी संसार की रचना सुगमता से हो सकती है। उनके संदेश हमें सदैव सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करते रहेंगे। ऐसे विरले संत को बारंबार नमन और ईश्वर से प्रार्थना है कि वे सदैव हमारे हृदय में बसे रहें।

सरदार शहर की पवित्र भूमि में आचार्यश्री का महाप्रयाण

हुआ। सरदारशहन अब एक ऐतिहासिक भूमि के रूप में जाना जायेगा। जिस संत ने इसी शहर में २६ जनवरी १६३१ को ११ वर्ष अल्प आयु में दीक्षा ली, जीवन के इस लंबे सफर को विराम भी इसी शहर में ६ मई २०१० को दिया।

इसी शहर की पवित्र भूमि पर ११वें आचार्य का जन्म १३ मई १६६२ अर्थात् आज के दिन हुआ था। ११वें आचार्य जिनको सरदारशहर में ही इस पद पर १० मई, २०१० को सुशोभित किया गया, को इस शुभ अवसर पर शत-शत प्रणाम। इस शुभ दिन पर ईश्वर से यही मंगल कामना करता हूं कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी अथक साधना व ज्ञान से तेरापंथ समुदाय की जो विशिष्ट पहचान बनायी है उसे आप, जिन्हें दो महान संतों आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हुआ है। निश्चित रूप से अणुव्रत आन्दोलन को एक और नयही पहचान दे पायेंगे। आप वास्तव में उन कतिपय संतों में से हैं जिन्हें दो महान संतों का इतने निकट से सान्निध्य प्राप्त हुआ है। यह आप ही का सौभाग्य है और आपके व्यक्तित्व व कृतित्व पर इसकी गहरी छाप है।

मेरा विश्वास है कि आचार्य महाप्रज्ञ के आदर्श हमें जीवन पर्यन्त ऊर्जावान करते रहेंगे और यही प्रेरणा सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर, कृपया नए एवं गुरुतम उत्तरदायित्व ग्रहण करने के अवसर पर, मुझ अल्पज्ञ का सादर नमन एवं विनम्र प्रणाम स्वीकार करें और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्न को साकारन करने की सतत चेष्टा में मार्गदर्शन एवं आर्शीवाद का मुझे सौभाग्य दें।

पुनः सादर नमन सहित ,

भवनिष्ठ

(अशोक बापना)

Condolence and Obituary

(Courtsy : Editors Here Now 4U)

H.H. Acharya Mahapragya today has left his earthly abode. He was a living legend of spirituality. His contribution to Jain philosophy and realisation of Ahimsa in daily life was pathbreaking. He was a port of hope in the eventful ocean of life for his disciples, followers, and students. 80 years out of his nearly 90 years on earth he fully dedicated to the service humanity.

We will never forget the encounters with him. It was he who gave the spiritual names Karuna and Aparigraha to us. Areas of our hearts and minds were activated and strengthened we were not aware until we met him.

We will miss him in our life, but will try to realise his teachings in thoughts, speech, and actions.

Karuna and Aprigraha, Berlin, Germany

With heavy heart I confirm the shocking news. Tears rolled down from my eyes when I heard the sad news at 3 pm today. It is the end of an era. H.H. was a great thinker and philosopher who cared for the welfare of the entire humanity. The world has lost a great personality who worked for peace and non-violence.

Sushil Bafana, Kolkata, India

My family members and myself are greatly saddened to learn about the Nirvana of Acharya Shree Mahaprajna. It is indeed a coincidence that only today afternoon my wife Vimal and myself talked about the unforgettable religious contribution and inspiration provided by Acharya Shree Mahaprajna. I shall always cherish a religious encounter-cum-discussion I was privileged to share with Acharyashri a few years ago in Mumbai when I discussed with him the Jain religion and Jain minority issue. I have always been inspired by his guidance.

Only recently ***HereNow4u.de*** published ACHARYA MAHAPRAGYA'S APPEAL for National Jain Unity http://www.herenow4u.net/index.php?id=69251 which I consider to be ***Magna Carta*** for Jain unity and survival in 21st century.

Bal Patil , Mumbai, India

It is with great shock that I learn of this sad news. All Jain scholars can have only admiration and gratefulness for the immense work accomplished by Gurudev Acharya Shri Mahapragyaji. He belongs to the great tradition of Jain monk-scholars and has provided us with many fundamental books. As a true teacher he has also encouraged several monks, nuns, samans and samanis to pursue the path of learning. This is how so many important studies have been published by the Jain Vishva Bharati in recent years. One of the most recent I have in my hands is the translation of Kundakunda's Samayasaara. I see it as a remarkable instance of Acharyaji's deep understanding of the tradition as well as of his openness of mind to modernity. The greatness of his personality and his charisma have been appreciated by all of us.

After the sad demise of Muni Jambuvijayaji a few months ago, the Jain community and all friends of the Jains are once again in deep sorrow.But these great men's contributions to mankind and knowledge will last for ever.

Prof. Dr. Nalini Balbir , Paris, France

As a young boy, I met Acharya Mahaprajna with Acharya Tulsi when they were in Pali, my birth place. I still vividly remember his simplicity and profundity. Recently, in 2006, with several other scholars from the USA, we visited Jain Vishwa Bharati, the Jain University in Ladnun, Rajasthan. Indeed, several of his innovative projects, like the University, the Preksha Dhyana meditation movement, the Ahimsa Yatra will indeed be remembered forever. Jainism has indeed lost its most prolific scholar, philosopher, saint, leader of our times.

Dr. Pankaj Jain, Denton, Texas, USA

It is with a great sadness I learn Acharya Mahaprajna's death. He will leave a splendid exemple of Jaina faith. His numerous teachings and writtings are for all of us extremely precious. I am assured he is now on the way of moksha. All my wishes to his successor as the head of Terapantha sect in a long succession of jain leaders who devote their life to teach non-violence and tolerance. Long life to him!

Pierre Paul Amiel, Nice, France

Acharya Mahapragya is no more. In his passing we have lost a great spiritual leader, a noble saint, a learned scholar, and an inspirational teacher. He became a Jain monk at the age of eleven and lived as a monk for the next eight decades of his life, dedicating himself to his own spiritual growth, and to the spiritual advancement of humanity. He had a full life during which he authored scores of books and hundreds of articles, and bhajans. He was a philosopher who had mastered the wisdom of Jain *Agams*. He embodied the principle of ahimsa and underscored not only its spiritual significance but also made it socially relevant. He constantly sought to create social harmony bringing communities together. Acharya Mahapragya will continue to inspire humanity with his message of making ahimsa a living code of ethics—as a way of life, and as the *only* way of life

Dr. Tara Sethia, California, USA

I like to say on the behalf of everyone from JVB London, that our Prayers and thoughts are with all the Samanijis. H.H. Acharya Mahapragya has left this earthly abode, but spiritually he is still alive and will always be in our heart and will always be there to guide us.

Soul is my god.

Renunciation is my prayer.

Amity is my devotion.

Self restraint is my strength.

Non-violence is my religion.

H.H. sent his Ambassadors of Samanijis throughout the world to spread his work for peace and non-violence and we will always be grateful to him. On December 2008 he got an Ahimsa Award from Institute of Jainology, London and today Jainism is a well known religion throughout the world. I am truly indebted to H.H and very proud to be a Jain.

Bipin Sheth, on behalf of JVB London, UK

Sun sets in afternoon - demise of Acharya Mahapragya. What an unfortunate I'm today while writing a demise news of person whose discourse I'm translating from past many years. Daily morning, I had mail having picture of Acharya Shri & Yuvacharya Shri with morning discourse. I sheered of thinking that this astonishing couple will not be seen together.

Today as a clock forms right angle with 12 & 3 in afternoon, mobile rang & word strikes- sun has set in noon, Acharya Mahapragya's journey has paused. For a moment, globe becomes black hole, tears roll out on an ever ever unexpected unwanted news. Just after being conscious, I did 4 time recitation of Logass as per custom to pay homage 2 soul. It is proverb that living monk is worth million & after death it is 1.25 million worthy as he has reached more closure to his final destination of salvation.

Though our hearts are full of pain & sorrow, but somewhere deep inside there is feeling that Acharya Mahapragya is closer to his ultimate aim for which he had accepted the monkhood 80 years ago.

Glorified salute to lively monkhood. A peaceful bow to the enlightened soul. He has started his new journey & millions like me are on the way to Sardarsahar to pay homage to his mortal body.

Mahima Bokariya , Surat, India

its so sad to hear this news. the best tribute we can do is to do more to spread preksha dyhan. you are already doing a lot. i

have to start now. may be i left it for too late to begin even though i was thinking to do more for the samaj for so long.

Lalith Jain, Infiniti Fze

I am extremely sad to note the passing away of His Holiness Acharya Shri Mahapragya Ji. His contribution to bring the teachings of Jainism to the world was enormous. I and Samanijis had carried his message of peace and nonviolence to the Parliament of the World's Religions in Barcelona, Spain, in 2004. Samanijis and Anuvibha representatives furthered his work of peace in Melbourne, Australia, last December. He will be missed as an embodiment of Ahimsa.

Naresh Jain, Rutherford, NJ, USA

We, the devote disciple of Acharaya Mahapragyaji are very much grieved to hear this news. May his message and teaching of Anekanta remain with us for ever and his memories.

Prof. Dr. Krishna A. Gosavi, Dr. Vijaya Gosavi, Mumbai, India

We are saddened to hear of the devlok gaman of Acharya Shree Mahapragya Ji today.

Acharya Shree was one of the great Acharyas of Jain Sangh. He was a giant among giants. Acharya Ji was a critical and rational thinker, prolific writer, great orator, an inspirer and a yogi. He was active up to his last breath and served the entire mankind with love and compassion. He will remain an inspiration for many generations to come.

Dr. Sulekh Chand Jain , Houston, Texas, USA

Jain Society of British Columbia, Canada is saddened by he passing of revered Acharya Mahaprgyaji and wish that we follow his teachings in our daily life.

Anand Jain, bajain[at]hotmail.com,
British Columbia, Canada

I am speechless to say anything with regard to His Holiness Acharya Shri. Eight decades of devotion to society at large

for spreading Yoga, Science of Living, Agam translation, Non-violence and numerous other activities. I am really surprised to see the power of a human body when I relook at his work. We read "Ananta Shakti" as a part of Pure soul but we have seen the same in Acharya Shri.

Kamlesh Jain, Orlando U.S.A.

A whole life devoted to spread non-violence and peace. May He have some now.

Paulo Roberto Soukup, Brasil

Param Pujayaniya Aacharay Shri Mahapragnya's news of Devlok gaman has come as a rude shock, because just few days before only, he announced that Chaturmas of 2014 will be in Ladnun. I was almost in tears. I met him many times and was completely mesmerized by his simplicity and great intellect. As a scientist I feel that his greatest contribution will be his books which are absolutely top. I have read 4-5 books and the way he has given new insight, modern interpretation and new vision to the Jain philosophy will be remembered for coming centuries. When domination of English language is increasing in our day to life. His books in Hindi provide fresh air and calm thoughts. I don't have any doubt to say that Jain religion and spirituality can be better understood only when we read great books written in Hindi by such great Aacharyas. The practical and implementable meaning of Jainism has helped me in better understanding and even solving my personal problems. His another most important contribution was his Ahimsa Yatra and his approaches to unite all sects of Jainism.

Dr. Surendra Singh Pokharna, Ahmedabad, Gujarat, India

We are very sorry to hear that Acharya Mahapragyaji is not with us any more but we are very thankful to have his teachings with us. May his soul rest in peace.

Ghanshyam & Shakun Srivastava, via JVB Houston

Om Arham. I and the leicester jain community is very sad to hear the news of Mahaprayagi today.

May his soul rise to heaven and beyond. Will keep it short but our feelings of loss are deep. Jai Jinendra

Smita Shah, Leicester, Jain Samaj Europe via JVB Houston

Sound technical understanding of various Jain and Vedic literature and philosophy and nicely derived linkage with human life well being led him in most sacred and holy place in spirituality. Ahimsa Yatra was one of most precious means derived by him to enhance human relationships, peace and prosperity. The great philosophical icon also wrote hundreds of books on Jainism, Happy Family, Spirituality, Happy Living, and alike lively subjects with descriptive and clear concepts presentation and application of basis of philosophy and values led down in Jainism on these aspects. He took Terapanth community and followers to all new global heights and was conferred with many international, national awards for spreading peace and harmony. This approach and presentation method associated and attracted many international and national philosophers, leaders and spirituality heads associating with him on presenting, resolving and taking spirituality ahead in global arena.

Acharya Mahapragyaji Passes Away - Jainism's Legendary Era Ends

Lalit Garg , Delhi, India

I am not surprised or saddened on the demise of Acharya Mahapragya. Since, I have met him personally several times in my life. He is a AHIMSA LEGEND, his testimony and advice on Ahimsa Parmodharma will never DIE, his instructions will be translated into action among the Students, Youth and Citizens irrespective of religion and the future world

will enjoy the fruits of Ahimsa.

Ignatius Xavier , Secunderabad, AP, India

On behalf of Jain Center of South Florida's Jain community we are very sorry to learn news about passing away (kaal-Dharma) of Acharya Shri Mhapragyaji on May 9, 2010. He was a living legend of spirituality. His contribution to Jain philosophy and realization of Ahimsa in daily life was path breaking.

His numerous teachings and writings are for all of us extremely precious.

Soul being eternal, naturally Jains believe in reincarnation. For Jains, it is the Soul, more precisely the state of purification and development of the Soul, which is responsible for those aspects of the person to which we are attracted for example, the pleasant personality, the happiness, one of the best scholar of our time, Acharya Shri Mahapragyaji might have gone from this earth but spiritually he will be with us for a generation to come.

Jayant Shah , Jain Center of South Florida – Weston-Fort Lauderdale, USA

Dear friends of Jain Education And Research Foundation,

It was indeed saddening to learn of Acharya Mahapragyaji's departure from this world. Acharya Shri may have left his *nashwar* body for his heavenly abode but he would always remain amongst us.

An amazing 80 years of continuous service and contribution to humanity—out of nearly 90 years of life is a rare feat that only truly enlightened souls can achieve. A master of many languages (Sanskrit, Hindi, Prakrit), a leader of unmatched vision (Anuvrat movement, JVB, FUREC), a constant innovator (Preksha meditation, Saman/Samani *pratha*), a prolific writer (200+ books on a variety of topics), a deep thinker (his work on Anekaantvad), a monumental researcher

(research and translation of Agams)—and yet simplest of human beings—he was a true legend, and would remain so.

I have little doubt that Lord Mahavir's teachings, that Acharya Shri spent his life propagating, will remain the guiding light for generations to come. On this occasion, we all should re-commit to the goals of the Foundation, especially to make sure that the next generation is not deprived of the wisdom of Jainism. Jai Jinendra

Dr. Kirti Jain

Please accept my condolences on the mahasamadhi of Ven. Acharya Mahapragya. He was, no doubt, one of the great religious teachers of our time. I have benefitted from reading his books, and was looking forward to meeting him later this year in Ladnun. At this sad moment, let us rededicate ourselves to bringing his message of peace, equanimity and pluralism to university students in the western world.

Dr. Nathan Katz

His demise is a heavy blow for the Terapanth community, for the Jaina world in general, and for enlightened citizens in India and outside India. ACHARYA MAHAPRAJNA was an eminent scholar of Indian philosophy (Jaina logic), he had a deep insight into the practice of meditation (preksa meditation as initiated by him), and he impressed by his teachings and his personality a great circle of listeners. He was consecrated as the 10th Acharya of the Terapanth order in 1995 by his famous predecessor Acharya Tulsi. ACHARYA MAHAPRAJNA's great social and religious achievement was a seven-year journey (2001-2009) through vast parts of India where he tried to strengthen the power of non-violence and where he visited more than 2000 villages.

ACHARYA MAHAPRAJNA's Spiritualism and non-sectarian nature has always been a weighty element in the life of his country, and there is hope that his line of thought and deed

will be continued by future Acharyas.

Prof. Dr. Klaus Bruhn , Berlin, Germany

His kind of saint is born once in an era. He was a living legend of spirituality, a critical and rational thinker, a learned scholar, prolific writer, great orator, an inspirational teacher and a yogi, a great spiritual leader and a noble saint.

He was a great inspiration along with Acharya Shri Tulsi for me. It was their motivation that I could study Sanskrit, Prakrit, Jain Agamas, Shwetamber and Digambar literature and was able to prepare Cyclopeaedias of Leshya, Kriya, Yoga, Pudgala, life of Vardhman Mahavira, Dhyan Kosh (in print). Acharya Shri Tulsi and Acharya Shri Mahapragya have given their written blessings for each of my research work. It was with their blessings that I was able to perform my job as honorary editor of 'JAIN BHARTI' when it was being published from Kolkata.

During childhood he was closely attached with our family at Tamkore when greater part of his day was spent at our family home and the ground nearby. His unexpected demise is an irreparable loss for our Choraria family and everybody believing in human and moral values.

He was active up to his last breath and served the entire mankind with love and compassion. He will remain an inspiration for generations to come.

I am assured he is now on the way to moksha.

Shri Srichand Choraria, Tamkor/Kolkata, India

Acharya Shri Mahapragya was a man of conviction. His openness has unlocked many hearts to embrace Ahimsa in their way of thinking and living.

He lived a full life of 90 years, practicing and preaching the philosophy of Ahinsa. Who can forget his Ahinsa Yatra?

Physically he is no more but he is spiritually alive in many ways. He is alive in hearts of people whom he has inspired.

He has journeyed on the wings of love and light.

Gurudev Chitrabhanu, New York City, USA

The demise of Acharya Shri Mahapragya Ji caused an irreversible loss to the whole humanity. A great saint and philosopher who gave a new dimension to the Anuvart movement. It is my good luck to meet him once at Pali. I have read many books written by him. I am following Anuvart principles in my daily life to the extent possible for me. His teachings will continue to inspire many generations to come.

Dr. Sheel Chand Jain, Delhi, India,

We were deeply shocked when somebody told about the passing away of H.H. Acharya Mahapragya at about 3,30 P M. We did not believe and tried to contact Sardarshahar but could not get in touch with any person from there. In the mean time we got the same message from some more persons and felt drowned in deep sorrow to have to this unbelievable news. Sri Nagaraj Dugar's phoned that he was going to Sardarshahar and can take Samaniji who staying at Sadhana Kendra and me to there. We immediately agreed as we want to have last darshan of the body, which will also disappear as His soul . We reached Sardarshahar at 1 A. M. and straight went to the place where His body was kept. We stood near the body and paid our homage to the departed Soul.

During the night I had all the sweet memories of my forty years service with Him. I had felt that He was a great enlightened and self–realized saint and had ATINDRYA GYANA confirmed by H.H. Gurudev Acharya Tulsi also. Whenever I had the opportunity to sit before him all my spiritual problems were solved without putting them to him. He had rediscovered the Jain System of Meditation gave the name Preksha Meditation which was lost and had trained monks, Nuns, Samaniji and householder like me.

He was a great philosopher and spiritual person and had written about 300 books to His credit. Thousands of persons

had got inspiration from his books and Sermons on Sanskar TV. During the first decade of this Twenty first century he had shown the path of Non-Violence and Peace to the whole world by undertaking the AHIMSA YATRA.

He was not only respected by Jains but had been respected by all walks of people including the great personalities of all the political parties. A great void has been created by His passing way. I had worked in the direction to fulfill his mission in my life and resolve to continue the same till my death.He has left behind Him a great tradition. He has given us a strong spiritual and a dedicated saint Acharya Mahashraman to lead us. It will be a real homage to Him that we try to see Mahapragya in Mahashraman.

Swami Dharmananda, Nirmala Jain Dehli, India

Acharya Shri Mahapragya during his life spread the message of Ahimsa and peace through the world. It is a great loss not only for the Terapanth community. He always will continue to live through his teachings and students; even he is not anymore bodily in the world.

Trupti Traudel Pandya, Berlin, Germany

The sad news of the demise of Acharya Mahapragya ji gave a great shock to me. We have not only lost an eminent Jain Philosopher and great scholar, but also the tenth Acharya, supreme head of Jain Swetambra Terapanth group. He had travelled more than 100,000 km on foot covering more than 10,000 villages, spreading the message of harmony and peace among all people of the society. During these travels, he addressed thousands of public meetings.

He has enlightened the whole world by his profound knowledge, his intuitive insight and wisdom. I pray for the emancipation of Acharyashri's soul.

Dr. Sohan Raj Tater , India

Our family is deeply saddened by the demise of Gurudev

Acharya Shri Mahapragyaji. His devotion to Jainism and leadership for the community has inspired thousands, including our family of five. Though we have spent the last 25 years in the US, the guidance of Acharyashri from afar was instrumental in keeping us spiritually grounded. During our trips home, we learned much from the camps and pravachans that he gave. His support of Shramnijis and Shramanjis has allowed us to gain further knowledge by interactions here. Our children have benefited from his darshan and teachings which will play out in their future and in our posterity. We will sincerely miss the most prolific and inspirational Acharyashri. http://www.huffingtonpost.com/nikhil-bumb/acharya-mahapragyaji-10th_b_572297.html

Dr. Amar Chand Bumb, Mrs. Raj Kumari Bumb, South Carolina, USA

The deep sorrow that I now feel upon news of the demise of Acharya Mahapragya Ji is not a normal response to the death of a holy man; there is something more holy at work: it is the spirit and character of the man.

This unfolded when in winter of 2005, Dr. Sulekh Jain, a fellow collaborator in a new organization we were creating; viz. ASJNA (Academic Study of Jainism in North America) had to be introduced to leadership in the Jain community in India. Toward that end, Sulekh devised a month-long yatra for me to facilitate, getting publicity out to lay Jain people, academics and to spiritual leaders to get them on board the ISJS train (International School for Jain Studies.) The plan was to bring to India first-class graduate students from Western universities, give them immersion courses in Jain history, culture and philosophy, with a view to have them return to their home universities, and there spread the word about the study of Jainism, hoping for a repetition of what we had done for Buddhism which is now flourishing, internationally. Two initial problems we encountered were a divided Jain community, and a somewhat cold shoulder from the Jain

spiritual leaders, due to the newness of the idea, and being unaware of the Western world's interest in their faith and philosophy. For our part we were convinced that if we could win the support of one big name Jain Acharya, others would follow.

Therefore, the ever resolute Sulekh Jain , hired a jeep and in short order we were driving to Rajasthan under the guidance of Dr. S.P Pandey (of Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi), there to have a darshan with Acharya Mahapragya Ji. I knew absolutely nothing about the man, He was staying temporarily in Rajasthan in a simple village of mud houses, and was now walking toward a meeting centre, covered by tent-like shamiana, and followed by throngs of devotees. Upon arrival, this frail man was whisked off into a small room, guarded by priestly attendants who held me, among the throngs, at bay. When we did meet, the question of language arose. Learning I could speak some Hindi, but more to establish equality and camaraderie; we began talks in Hindi, including some mild arguments. Regardless of my tooty-footy Hindi, he got my message about ISJS, supplying some of his own words, and declared our meeting memorable; consternation on Dr. Pandey's face was telling. Not wanting to overstay the welcome, I slipped out in the crowd, but was promptly summoned to return, by the same guards who kept me out, and were now wondering what was the gravity of our talk. It seems we clicked, to become known later, because my message of Jain education to the world was already in his plans...

A few years later, his true state of mind became apparent first thing in the morning, following conferral of D.Litt on me by JVBI. After a few pleasantries, he stretched over the length of his talk and assured me that the substance of our exchanges were among the very things Acharya Tulsi, asked of him, and he was now asking of me through the instrumentality of ASJNA. Now in Rajasthan, the vision was coming full circle.

Then, to endorse his commitment to our cause, he promised me all resources we would need to advance Jain studies in the West and in India. My surprise was that this ascetic, of all people, would so deftly and quickly enter my mind and heart, and there build a temple to Lord Mahavir. In Matild's (my wife) judgment it was the humility of the man that transformed people's prejudices and brought out their better nature.

So be it. I am resolved to channel my deep sorrow at his passing to continue the visions of Acharyas Tulsi and Mahapragyaji. As representatives of the International School for Jain Studies (ISJS), an organization to which he gave blessings, we now remember achievements of his long, illustrious life of global impact. ISJS will institute a prize for visionary achievement to keep alive the vision he had set. His writings and books will be made known to Jain academics world over. Now, our admired guru belongs to the ages, which instantly makes of us one family, united in both grief and joy. Shanti, shanti.

Prof. Dr. S. Cromwell Crawford , Honolulu, Hawaii, USA

GURU is essential in every walk of life. Spiritual GURU is the supreme of all. I am lucky and proud to have had Acharyashri as my spiritual GURU. Who says he is no more there. He is there in my mind and heart always. So is he in everyone of his follower's heart and mind too, guiding us day and night to the right faith, right knowledge and right conduct. We have to keep his presence felt by practicing his pious teachings in our day-to-day life.

Naresh Anchalia, Surabaya, Indonesia

It is a sad day that the light of Gurudev Acharya Mahaprajnaji is no more. I remember my first meeting with the Acharya in June 2008 in Jaipur. We had a half hour discussion on yoga and meditation and he inspired me to change my dissertation

topic to Jain yoga and Preksha Meditation. I had the pleasure of spending the last quarter of 2009 at Jain Vishwa Bharati doing research with all of the community in Ladnun and he continued to inspire my studies. He was a deep thinker and a prolific scholar whose contributions to the Jain world in particular, and to Indian civilization will continue to inspire others. His legacy of Ahimsa, Preksha Meditation and relative economics will continue to flourish. His demise is truly a sad day for all of us who were touched by him.

Smita Kothari, Toronto, Canada

I had the distinct pleasure of having Darshan and meeting with Acharya Mahaprajnaji during his Chaturmas in Udaipur on the evening of October 1, 2007. In many ways, he represented the best face of Jainism for our Age, through his progressive thinking and prolific writing which are highly appropriate for our times and relevant to the challenges humanity faces. He was gifted with the ability to communicate both, orally and in writing, to relate to young persons and scholars alike, and thereby convey the simple message of Ahimsa and Respect and Jain Way of Life to many outside the Jain community as well. He was a visionary in his advocacy of the need to develop an internationally relevant curriculum for formal study and dissemination of Jainism. He empowered young Jain scholars/Ambassadors of Goodwill in the form of Samans and Samanis to spread our unique beliefs and their awareness worldwide. We wish the departed soul well on its path to Moksha, and look forward to continued inspiration and educational programs/visits from Shri Yuvacharya and all learned scholars of Jain Vishwa Bharati.

Manish Mehta , Ann Arbor, Michigan, USA

Jai Jinendra. Samani Prasanna Pragya and Samani Rohit Pragya had visited Switzerland from 1st May 2010 for 10 days. We had organised series of talks by them on different aspects of Science of Living, Preksha Meditation and Jain

basic preachings and philosophy. On 9th May, Swiss Jain group had celebrated Akshay Tritiya one week in advance, to take advantage of the presence of Samanijis. As the morning session ended around 12:00 noon, we were appalled to hear thru London & India about the sudden Mahaprayan of Acharya Mahaprajnaji. This sent shockwave among all of us even those who had not the opportunity to have his Darshan. My wife and I had the privilege of having his regular Darshan during our annual winter visit to India. On a priority basis, arrangements were made for both Samanijis to fly to London and from there to India.

Besides family visit, being the member of Board of Management of Jain Vishva Bharati University, during every visit to India I had his Darshan. The last one was at Sri Dungargarh. Acharya Mahaprajnaji was the most learned living seer and scholar of Jainism. As title in your newsletter says, Jainism's Golden Sun has set with his Mahaprayan.

B.Raj Bhandari, Geneva, Switzerland

Acharya Mahapragya Ji had such a fantastic memory and concentration and at his age is to be admired. I had seen him doing multitasks i.e. teaching Sadhus / Sadhvis, assisting with translation of Shastras, talking to visitors and reciting Mangal Path, and also talking to me without forgetting what the last thing we said. He always found time to talk to children in between. He was an incredible person.

I was in Delhi when he was given the President's Award. I felt as if I and the whole Jain community was awarded and made me feel very proud to be a Jain.

The World has lost a great soul, a unique person, and a great humanitarian whilst Jains have lost a great Acharya, but fortunately he has left a great legacy behind him and Mahashraman Ji to continue his work.

Tribute to Acharya Mahapragya Ji

Arvinder Jain, Birmingham, UK

Acharya Mahapragya's Appeal to Unite for the servival of Jain religion and comunity - compiled by Bal Patil

Acharya Mahapragya in his inaugural speech of the **Jain Shasan Vikas Manch** said that this **Manch** (organisation) should be built on the model of the United Nations. When the United Nations was established all the nations did not join it. A few nations got together and started working. Impressed by its international outlook and common peace and welfare work more and more nations joined it. This is a good example to be followed for Jain unity. It is basic principle for Jain unity that in order to preserve Jain religion and community we must be united. We must think how we can become stronger. Jain religion is independent. It should not be seen as part of Hinduism or Buddhism. Now we must be concerned more with our shortcomings rather than achievements. Acharya Mahapragya referred to an instancer of how an ancient **Bhagvan Mahavira** image was transformed in south India into a **Devi.** There are many such instances. Why do Jains have to face such instances? It is because Jains are not united. We are not vigilant. In spite of our Agamic spiritual, Philosophical, intellectual heritage and wealth we are still weak because we are not united. Therefore it is necessary that we should organise **Jain Shasan Vikas Manch** and not get involved in controversies such as mode of worship.

आचार्य महाश्रमण के प्रवचन 'संस्कार' चैनल पर प्रतिदिन प्रातः ८:१५ बजे से सुन सकते हैं।

–संपादक

अध्यात्म साधना केंद्र में गुरुपूर्णिमा दिवस दिनांक २५ जुलाई २०१० को प्रातः ६:३० बजे मनाया जाएगा। सभी साधक साधिकाएं इस कार्यक्रम में आमंत्रित हैं।

शंका एवं समाधान (समाधान गुरुदेव आचार्य तुलसी द्वारा)

प्रश्न : व्रत का स्वीकार उसकी उत्पत्ति है। इससे चेतना-जागरण के लिए बीजों का वपन होता है, यह सही है। पर बीज-वपन ही व्रती जीवन का उद्देश्य नहीं है। उन बीजों की निष्पत्ति कैसे हो सकती है?

उत्तर : बीज की निष्पत्ति उसकी अपनी क्षमता पर निर्भर है। उर्वरा भूमि, वर्षा, धूप, हवा आदि उसकी सहायक सामग्री है। बीज में अंकुरित होने की क्षमता न हो तो सहायक सामग्री से कोई लाभ नहीं हो सकता। व्रत की भी यही स्थिति है। उसकी निष्पत्ति का मूल आधार है अध्यात्म-चेतना की क्षमता। इस क्षमता के बिना व्रतों को अंकुरित होने का अवकाश नहीं मिल पाता। राज्य और समाज की अनुकूल व्यवस्था, देशकाल की अनुकूलता, व्रतों के अनुकूल विचारों और दृष्टिकोण का निर्माण तथा उचित परिमार्श्व व्रतों की निष्पत्ति में सहायक बनते हैं।इनमें मुख्य तत्त्व है व्यवस्था और दृष्टिकोण। इन दोनों में भी दृष्टिकोण का अधिक महत्व है। दृष्टिकोण सम्यक् हो तो व्यवस्थागत कठिनाइयों के बावजूद गति हो सकती है। आध्यात्मिक चेतना का अवरोध मिथ्या धारण से होता है। जिस दृष्टि में सत्य की प्रतिष्ठा हो, वहां मिथ्या धारण जम नहीं सकती। एक कामुक व्यक्ति की कामुकता केवल चारित्रिक दुर्बलता नहीं है, मुख्यतः दृष्टिकोण की दुर्बलता है। शरीर मात्र उपयोगिता का माध्यम है पर कामुक व्यक्ति के सामने कामना का ही चित्र उभरा हुआ रहता है। कामुक दृष्टिकोण बदलने के लिए शरीर के प्रति अशुचि भावना का अभ्यास होना आवश्यक है। दृष्टि का मिथ्यात्व प्रतिपक्ष भावना से सहज ही दूर हो सकता है।

मनुष्य की दृष्टि में अनुराग और विराग की स्थिति बुरे को अच्छा और अच्छे को बुरा बना देती है। वेदान्त दर्शन के अनुसार मनुष्य साधारणतया प्रतिभास को अधिक देखता है। उसके मन में जो चित्र बने हुए हैं, वे ही प्रतिबिंब होते हैं। जिस

व्यक्ति के प्रति मानसिक अनुराग होता है, उसके दोष गुण बन जाते हैं और अनुराग के अभाव में गुण दोष बन जाते हैं। किंतु मध्यस्थ व्यक्ति अनुराग और विराग की भूमिका से ऊपर उठ जाता है, क्योंकि उसका दर्शन सम्यक् है। इसलिए उसके सामने दोष और गुण अपनी मूल स्थिति में ही प्रतिबिम्बित रहते हैं। इन विचारों को निम्न श्लोक में पढ़ा जा सकता है–

दोषा गुणा गुणा दोषाः, दोषा दोषा गुणा गुणाः।

क्ले, विरक्ते, मध्यस्थे, स्वामिनी त्रिविधा गुणाः।।

सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन का फलित ही सम्यक् चारित्र है, इसलिए व्यवस्था की प्रतिकूलता में भी सम्यक् दृष्टिकोण का निर्माण आवश्यक है। सम्यक् दर्शन के साथ अनुकूल व्यवस्था का योग व्रत-निर्माण में सहायक हो सकता है।

भ्रष्टाचार एवं अनाचार क्यों?

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि आज चरित्र का इतना ह्रास क्यों हो रहा है। कारण क्या है? क्या आचार-शिथिलता बढ़ रही है? इन प्रश्नों का एकमात्र उत्तर यही है कि शोधन नहीं किया जा रहा है, शोधन की प्रक्रिया ही बंद होती जा रही है। न भावों का शोधन हो रहा है। न लोभ, मोह, मान, माया एवं तृष्णा पर अंकुस लगाने के प्रयास हो रहे हैं। बल्कि उन्हें उद्दीपन मिल रहा है। ऐसी स्थिति में भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार बढ़ेगा ही। कितने ही कानून बना दिये जाएं, सतर्कता आयोग गठित किया जाए, भीतर में लोभ विद्यमान हैं तो रिश्वतखोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी सब चलते रहेंगे।

एक सीमा तक लोभ का शोधन करना होगा। कोई भी वीतराग नहीं बन सकता। किंतु एक सीमा तक शोधन की यह प्रक्रिया चलानी होगी।

–आचार्य महाप्रज्ञ

अनुभव के स्वर

१. मैंने हृदय रोग निवारण शिविर में भाग लिया। इसका उद्देश्य जीवन शैली में परिवर्तन का प्रशिक्षण था। हमने प्राकृतिक ढंग से जीने, अपने सोच का बदलना, संयम रखना एवं खानपान एवं समय नियोजन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। यहां के अनुभवी शिक्षकों ने अच्छा प्रशिक्षण दिया। व्यक्तिगत रूप से साधकों उसकी शारीरिक क्षमता के अनुसार प्रशिक्षण दिया गया। भोजन एवं आवास व्यवस्था उत्तम रही है। मैं इसका प्रचार अपने परिवार एवं मित्रों में करूंगा।

वेद प्रकाश गोयल, N- 91, विजय विहार, उत्तम नगर दिल्ली-५७, मो. ९६७३५३१३६८

2. I have taken part in a camp for Reversal of Heart, Diabetes and H.B. I have learned here to live in an organised way of life. This camp taught us about how our body in working and to keep it fit we have to follow an organised daily routine. This routine must include meditation, Yoga asana , Pranayama, Contemplation and Deep relaxation according to the Preksha Meditation technique. It was a wonderful experience live in an Ashram and have interaction with many people.

   I suggest that more doctor should visit the camp.

   Mrs. Pushpa Khanna, *B-1905, 3, Cedo Park, Tordelar Street, Manila-Philipines*

2. The course offered by Adhyatam Sadhana Kendra to reverse of Heart, Diabetes and High B.P. was very good and energetic. According to me I found the camps training was free from stress, to get more energy and more knowledge to leads good life. The time table of the camp was well planned and sufficient for the participants. Some more time for yoga should be given. In my opinion the objective of the camp in fulfilled up to 75 %. We have got our doubt have been cleared. I feel that the training will be useful in our life ; I will inform my relatives and friend of the programme.

   Mrs. V.V. Parvathy, *C1/11, Sahgari C.G.H.S. Ext. Plot No. 5, Sector -12, Dawarika, New Delhi-110078*

   Mob. 9818962703

साधना केंद्र द्वारा विभिन्न कार्यक्रम

मई माह का एक मात्र प्रेक्षा ध्यान हृदय रोग, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप निवारण शिविर संपन्न

'अध्यात्म साधना केंद्र' में मई माह का प्रेक्षाध्यान हृदय रोग, मधुमेह एवं उच्च रक्त चाप निवारण शिविर का आयोजन दिनांक ६ मई २०१० से १५ मई २०१० तक संपन्न हुआ।

पूर्व की भांति इस बार भी शिविर के समस्त कार्यक्रम स्वामी धर्मानंद जी के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उन्होंने संभागियों को बताया कि बीमारी के मूल में मानसिक तनाव है। इन्होंने तनाव निवारण में प्रेक्षाध्यान की भूमिका पर प्रकाश डाला। आगे उन्होंने बताया कि मन से अमन होकर चित्त से जुड़ने की विद्या का नाम प्रेक्षाध्यान है। मन का कार्य से स्मृति, कल्पना, विचार या चिंतन करना, चित्त का कार्य है देखना, जानना एवं अनुभव करना। हमें प्रेक्षाध्यान की नियमित साधना कर वर्तमान के प्रति जागरूक होना है। यह वर्तमान के प्रति जागरूक ही रोग उन्मूलन में सहायक है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के पूर्व विभागाध्यक्ष हृदय रोग प्रो. डॉ. एस. सी. मनचंदा ने संभागियों को अपने शोध की जानकारी देते हुए बताया कि हृदय रोग का मुख्य कारण मानसिक तनाव, खान-पान, व्यायाम का अभाव तथा नशीले पदार्थों का सेवन है। उन्होंने लोगों से कहा कि व्यक्ति अपने खान-पान एवं जीवन शैली को ठीक करे तथा प्रेक्षाध्यान पद्धति का नियमित अभ्यास करे। इसके नियमित प्रयोग से हृदय के धमनियों में आया अवरोध दूर होता है। तथा रक्त में कोलोस्ट्रोल एवं ट्राई ग्लिसराइड का स्तर कम होता है। इसके प्रयोग से आज हजारों स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

संस्था के डॉ. सुनील सिंह ने संभागियों को शरीर क्रिया विज्ञान की सैद्धांतिक जानकारी के साथ-साथ चिकीत्सकीय परीक्षण एवं उचित परामर्श भी दिया।

लोगों ने यहां के दिव्य वातावरण खान-पान, सफाई, कर्मचारियों के व्यवहार एवं इस कार्यक्रम को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

मानव सेवा योग संस्थान तरूण एन्कलेव मधुबन चौक वार्षिकोत्सव

दिनांक २ मई २०१० को प्रातः मधुबन चौक के पार्क में मानव सेवा योग संस्थान के वार्षिकोत्सव में स्वामी धर्मानंदजी मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। लगभग २०० साधक साधिकाओं के मध्य योग आदि के बाद स्वामी धर्मानंदजी ने योग को परिभाषित करते हुए कहा कि योग सिर्फ आसन ही नहीं है। योग में भोजन सात्विक हो, आचरण पवित्र हो, साथ में ध्यान भी हो तब योग पूर्ण होता है। प्रेक्षाध्यान साधना में यह सब प्रयोग सम्मिलत है। प्रेक्षा ध्यान में अनुप्रेक्षा का प्रयोग भी कराया जाता है जो अन्य ध्यान पद्धतियों में नहीं है। स्वामीजी ने अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया। सबने प्रसन्नता प्रकट की।

मानव योग सेवा संस्थान नांगलोई का वार्षिकोत्सव

२३ मई २०१० को मानव योग सेवा संस्थान नांगलोई शाखा के वार्षिकोत्सव में नांगलोई विद्यालय के प्रांगण में भाग लिया। २०० साधक साधिकाओं में अधिकांश साधना केंद्र से परिचत थे। स्वामी धर्मानंद जी ने श्री विनोद शर्मा संचालक नांगलोई शाखा के निवेदन पर अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया। यह प्रयोग यहां के साधकों के लिए प्रथम बार था जो सबको अच्छा लगा।

नैतिक शिक्षा के साथ विराग की शिक्षा

हम इस बात को मानते हैं कि एक समाजिक प्राणी कोरा विरागी नहीं बन सकता। परिवार में माता-पिता और अभिभावकों की अपनी अपेक्षाएं होती हैं। लेकिन कोई साधना का मार्ग अपनाना चाहता है तो उसके मार्ग में अवरोध क्यों खड़े किये जाएं। परिवार का कोई एक सदस्य अध्यात्म की ओर उन्मुख होकर संन्यास का मार्ग लेना चाहता है तो उससे परिवार स्वयं को असुरक्षित क्यों महसुस करे? यह बात आज सबको समझ लेनी चाहिए कि भावी पीढ़ि को अगर अपराथ और अनैतिक कामों से मुक्त रखना है, विनीत, अनुशासित और नैतिक रखना है तो अन्य शिक्षा के साथ-साथ विराग की शिक्षा भी जरूर दिलाएं।

आचार्य महाप्रज्ञ

प्रेक्षा ध्यान द्वारा हृदय रोग निवारण हेतु शोध कार्य में हृदय रोगीयों के प्रशिक्षण हेतु आमंत्रण

केन्द्रिय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शोध संस्थान के अनुदान से अध्यात्म साधना केंद्र में निम्न सप्तदिवसीय प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण शिविरिों में सम्मलित होकर हृदय रोग निवारण के शोध कार्य में सहभागी बनें।

शोध परियोजना के अंतर्गत निम्न शिविरों के आयोजन की योजना बनी है।

१.	मार्च	२०१०	–	२१ से २८
२.	अप्रैल	२०१०	–	०४ से १०
३.	मई	२०१०	–	०६ से १५
४.	जून	२०१०	–	मई ३१ से ०६ जून
५.				२४ से ३० जून
६.	जुलाई	२०१०	–	०६ से १५ जुलाई
७.			–	२५ से ३१ जुलाई
८.	अगस्त	२०१०	–	६ से १५ अगस्त
९.				२५ से ३१ अगस्त
१०.	सितंबर	२०१०	–	०६ से १५ सितंबर
११.			–	२६ से ३० सितंबर

इन शिविरों में रोगियों की निःशुल्क जांच की जायेगी। उनके आवास एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था निःशुल्क होगी। कृपया शिविर में सम्मलित होने के लिए संपर्क करें :-

योग प्रशिक्षक

अध्यात्म साधना केंद्र, छत्तरपुर, नयी दिल्ली-११००७४,
दूरभाष : २६८०-२७०८१-२६७१
e-mail: sadhanakendra@gmail.com

योजना अधिकारी - सावल हार्ट रिसर्च फाउंडेशन,१४/८४,
विक्रम विहार, लाजपत नगर- ४, नयी दिल्ली ११००२४
दूरभाष - २६३५१६८/२६२८३०६८
e-mail: info@saaol.com

जून २०१० जुलाई २०१० में आयोजित होने वाले शिविरों की तालिका निम्न है :

जून 2010

31मई से 6 जून - प्रेक्षा ध्यान, हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप निवारण शिविर

08 - 14 प्रेक्षा ध्यान, श्वास एवं मानसिक समस्याओं का निवारण शिविर

16 - 22 प्रेक्षा ध्यान शिविर

24 - 30 प्रेक्षा ध्यान, हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप निवारण शिविर

जुलाई 2010

02-07 प्रेक्षा ध्यान, श्वास एवं मानसिक समस्याओं का निवारण शिविर

9-15 प्रेक्षा ध्यान, हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप निवारण शिविर

16-22 प्रेक्षा ध्यान शिविर

24-31 प्रेक्षा ध्यान, हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप निवारण शिविर

दैनिक निःशुल्क साधना कार्यक्रम

1- **प्रेक्षाध्यान –**

प्रथम सत्र प्रात : ०५:१५-०६:१५ बजे तक

द्वितीय सत्र प्रात : १०:३०-११:०० बजे तक

तृतीय सत्र रात्रि : ०८:१५-०९:३० बजे तक

२. स्वास्थ्यवर्द्धक क्रियाएं –

आसन-प्राणायाम प्रातः: ०६:१५-०७:१५ एवं ७:१५ से ८:१५

३. कायोत्सर्ग मध्याह्न : ११:१५-१२:०० बजे

मन की एकाग्रता

मन की एकाग्रता का अभ्यास अगर आपने नहीं किया है तो १ घंटे के धर्म कार्य में मुश्किल से १० मिनट का फल आपको मिलता है, मन की स्थिरता के अभाव में धार्मिक क्रिया अपना उचित फल नहीं देती। इस पर बहुत ध्यान देने की जरूरत है। लोग अपनी प्रश्न के अनुसार तरह-तरह के धार्मिक क्रिया करते हैं। लेकिन उनके साथ मन नहीं जुटता तो कोरी क्रिया से कुछ होने वाला नहीं है। यह मात्र समय का अपव्यय होगा। उसे कोई फायदा मिलेगा नहीं।

–आचार्य महाप्रज्ञ